नयाँ नेपाल

गोरखापत्र
gorkhapatraonline.com

समावेशीकरणको दिशामा एउटा फड्को : गोरखापत्रद्वारा प्रकाशित
थारू भाषा पृष्ठ

अखारही पूजा या गब

अखार १ गते घरके गाहलीके बिचला खमहामे चारु ओर के खमहामे डिभके चेकरी सेहो दैछै । या गाहली के चारमे पटसैन गाछ के डाइढ सेहो खोइस के राखैछै । यैसे गाई माल के कोनो किसिमके रोग ब्याधि से बचेबैछै से जन विश्ववास छै । त दुइभ एक शुद्ध घास चियै जे कि थारु समुदाय से सैव किसिमको धार्मिक या साँस्कृतिक कार्यक्रम मे प्रयोग हैछै । गाहली हरदम गाईमाल से हराभरा रहे सहो कामना के लेल यि राखल जाइछै ।

वन्दना चौधरी

थारु समुदाय प्रकृतिक पुजक चियै । बेसी से बेसी थारुसब खेतीकिसानी से आपन गुजारा चलाईछै। खेती के लेल अखार मैहना एक बडका महत्व के मैहना चियै । अन्न के रजाके रुपमे मानल धान यहै समय मे रोपल जाइछै ।

अखार मैहना के पैहेनका दिन अर्थात १ गते थारु समुदाय मे अखारही पुजा करल जाइछै । यै पुजा के आपन अलगे महत्व छै । थारु समुदाय के सैव गाम मे एकटा थान रहबे करैछै । जेकरा डिहवार थान, राजाजी थान, ग्राम थान, ब्रहमथान लखा नाम से ठाम ठाम के थारु सब बोलाबैछै । कतबहोक नाम छै लेकिन ओकर बनावट या पुजा करै के तौर तरिक करिब करिब एके किसिम के छै । यै पुजा के जात पुजा सेहो कहैछै ।

अखार १ गते घरके गाहलीके बिचला खमहामे चारु ओर के खमहामे डिभके चेकरी सेहो दैछै। या गाहली के चारमे पटसैन गाछ के डाइढ सेहो खोइस के राखैछै। यैसे गाई माल के कोनो किसिमके रोग ब्याधि से बचेबैछै से जन विश्ववास छै । त दुइभ एक शुद्ध घास चियै जे कि थारु समुदाय से सैव किसिमको धार्मिक या साँस्कृतिक कार्यक्रम मे प्रयोग हैछै । गाहली हरदम गाईमाल से हराभरा रहे सहो कामना के लेल यि राखल जाइछै ।

अखारी पुजारजात पुजा के लेल आपन आपन पटी मे रहलहा जेवार सब बैठकी करैछै या निर्णय करैछै । काम के बाडफाँड सेहो करैछै । सब के बेहरी (चन्दा) लग्याल जाइछै । आपन आपन पट्टी के जिम्मा जेवार लेने रहैछै । पुजा के दिन सबके घर के देवता के निपपोट त हेवे करैछै थान मे विशेष किसिमके सरसफाई मर्मत सम्भार या थान के देवधरा के फेर से बनेनाई काम सेहो हैछै । अखैन त पक्का से बन्याल रहैछै ओतहेक मेहनैत नै करैले परैछै । पुजारी थानपती पैहने से तोकल गेल रहैछै या अखैन तैक ओकरे धियापुता सब पुजारी के रुप मे ओइ दिन पुजा करैछै । कतहेक गाम मे त उ पुजारी दोसरे गाम से आबैछै । साँझ गाम से सब कोई धिया पुता से ल्याके बुढ पुरान तैक थान मे बजा गजा से साथ जम्म हैछै या पुजा करैछै किर्तन भजन भगैत गावैछै । कतहेक ठाम त देवता के पन्थ लाइव के निक बेजा सेहो पुछैछै । पुजा के लेल दुई किसिम के खिर बनेने रहैछै । एकटा गुँड खिर या एकटा दुध खिर, आम, कटहर, केरा, लरु, पान, सुपारी त रहबै करैछै । पुजा के तयारी पुरा भेलाके बाट थान मे पुजारी पुजा करैछै या ओइसना रहलहा सबकोई ओकर पछा पछा से हो पुजा करैत जाइछै या गोडमुड लागैत जाइछै । पुजा के समय मे पेरवा या छगरा के सेहो बोइल चढ्त्याल जाइछै । भेला भेलहा सब के परसाद के रुपम मे खिर परसल जाइछै । जहतके घर छै ओतहेक पारस सेहो लग्याल जाइछै या घर घर पुग्याल जाइछै । छगरा के मौस सेहो तहे हिसाव से घरही परसल जाइछै ।

भितर मे ५ पाँचटा पुजा हैछै । बहार मे ठाम ठाम मे ९ टा पुजा रहैछै । कतौ कम बेसी रहैछै । यै पुजा के विषय मे जिज्ञासा राखने कोनो ठोस एके किसिम के जवाफ नै भेटलै । कतहेक धामी या पुजारी त बौवा सैव दिन से यैहङ करे त येलछे जवाफ देछै । यि गाम के राजा चियै कहैछै । बहार मे रहलहा बखारी, तुमरो मुखिया, तुमरो मुखिया के मचा, धामी, देवी देवता सेहो चियै कहैछै । कात मे संन्यासी के थान सेहो रहैछै । रहल पहल चिरखा सब ओइसना ज्या के बारल जाइछै । लेकिन ओकरा महिन रुपसे बुझलापर पाँचटा पुजा पञ्च तत्व चियै । जैमे जमिन, अकाश, आइग, पाइन या , हवा छै । थारु के थान के अखैन तैक कोनो भि स्वरुप के आकृति नै रहैछै । ने ओकर घर के देवता मे कोनो आकृति रहैछै । येकरा बौद्ध संस्कार या रितीरिवाज से सेहो जोडल जाइछै ।

यि पावैन मनावैले थारुसव स्वतन्त्र छै । गब लैमे सेहो स्वतन्त्र रहैछै लेकि दुइभ के चेकरी या पटसैन १ गते राखैछै । सरकार धान दिवस के रुपमा अखार १५ गते के धोषणा करलकै तै दिन से कतहेक लोक त ओहै दिन गव लैछै । थारु मे दही चुरा खाइखै खास चलन नैछै । अखने दोसर के देखासीखी से यि चलन येलछै । तहो मे जे खेती करैछै तैसेबेसी खेतीपाती नै करैवला सब धान दिवस बेसी मनाबैछै या दहि चुरा खाइछै । असली किसान के त येकर बिषय मे थाहो नेछै । कोनो निक दिन ताइक के घर के मुखिया घरमे पुजा क्या के तैयार भेल खेत मे ज्या के पुजा कैरके कदुवा मे कम्तिमे पाँचौटा गब गारैछै । तेकरा तुरन्तै खेत रोपनी सब चारुभर से दोसर गव गाइर के झाइप देछै । ओई दिन आन दिनका से निक निक खान पनि के ब्यवस्था रहैछै । आपन तैयारी मुताबिक सबकोई एकै दिन या दोसरो दोसरो दिन गब ल्या सकैछै । यै किसिम से रोपनी के शुरुवात हैछै । अखने त विकासी धान करैछै यो ट्र्याक्टर से खेती करलाके चल्ते यि चलन मे कमि येल जाइछै । खेत रोपनी के अन्तिम दिन कदपखार करैछै । ओइ दिन रोपनी खतम भ्या जाइछै । योहो तिन एक महत्वपुर्ण दिन दियै । यहो दिन घर के लोक के संगे संग जन हरवा के लेल विशेष खान पनि के ब्यवस्था करलजाइछै । कोनो भि किसिम के प्रकोप से बवाबैके लेल, अन्न बाइल निक से सँप्रेके लेल या गाम मे कोनो किसिम के आपत विपत नै आबे तेकर कामना करैत यी पुजा करल जाइछै । यै किसीम से प्रकृति या ओकर सिर्जलहा चिजबिज के संगे खेलैत धुपैत थारु समुदाय सब खेती के सुरु करैछै या अन्त करैछै । यैसे थारु समुदाय मे पुरापूर्वकाल से येलहा संस्कार, कार्य प्रणाली, शासन व्यवस्था, सहयोग,सहकार्य या एकता सेहो बुझहल जाइछै ।

घोराहीके स्कुलसबमे सौनसे थारू भसामे परहाइ

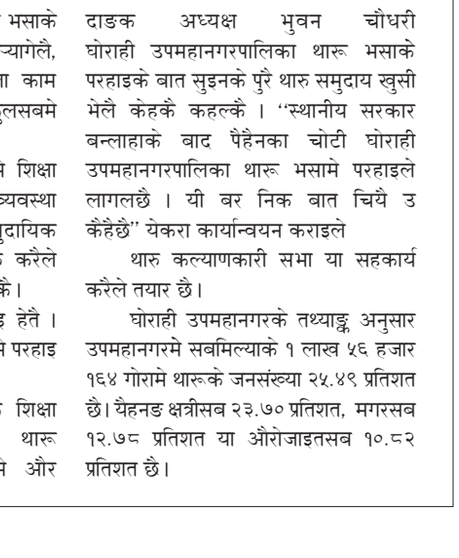

घोराहीके सब सामुदायिक स्कुलमे थारू साल बच्चासबके बेसीसे बेसी छै । उ कैहैछै, नयाँ शैक्षिक सत्रसे घोराहीके थारु बालबच्चा बेसी भेल स्कुलमे कक्षा १ से ल्याके ३ तक परहाइ तयारी छै । मतर तत्काल कक्षा १ मे मात्रे थारु भसामे परहाइ हेतै ।

दाङ । दाङके घोराही उपमहानगरपालिके सामुदायिक स्कुलसबमे थारू भसामे परहाइ हेबलाछै । उपमहानगरपालिका थारु भसामे परहाइकेलेल थारु भसाके किताव लिखके तयार करनेछै ।

थारू भसा, कला, संस्कृतिके जोगाइले या वोकर विकास सेहो करैकेलेल थारू बालबच्चा परहैबला स्कुलसबमे थारूवे भसामे परहाइले लागलचियै कैहके घोराही उपमहानगरपालिके मेयर नरुलाल चौधरी कहल्कै । "थारु भसाके किताबसब बनाइबला काम सब ओऱ्यागेलै, उ कैहैछै," आब किताब छपाइबला काम ओराइतेमातर सौनसे सामुदायिक स्कुलसबमे परहाइ हैले सुरु भ्याजेतै ।

नेपालके संविधानैमे मातृभाषामे शिक्षा लैले पावैछै कैहके मौलिक हकके ब्यवस्था करलाहासे उपमहानगरके सामुदायिक स्कुलसबे थारू भसाके परहाइ सुरु करैले लागलचियै कैहके मेयर चौधरी कहल्कै ।

यीटा बछर कक्षा १ मे परहाइ हेतै । तकरबाद २,३,४ ५ या और कक्षासबमे परहाइ सुरु हेतै कैहके उ कैहकैछै ।

यैहनङ घोराही उपमहानगरके शिक्षा महाशाखा प्रमुख विनोद गौतम थारू समुदायके धियापुतासबके परहाइमे और सहयोग हेतै कैहके कक्षा चालु करैले लागल चियै कैहके कहल्कै ।

घोराहीके सब सामुदायिक स्कुलमे थारू साल बच्चासबके बेसीसे बेसी छै । उ कैहैछै, नयाँ शैक्षिक सत्रसे घोराहीके थारु बालबच्चा बेसी भेल स्कुलमे कक्षा १ से ल्याके ३ तक परहाइ तयारी छै । मतर तत्काल कक्षा १ मे मात्रे थारु भसामे परहाइ हेतै ।

थारू कल्याणकारिणी सभा दाङक अध्यक्ष भुवन चौधरी घोराही उपमहानगरपालिका थारू भसाके परहाइके बात सुइनके पुरे थारु समुदाय खुसी भेलै केहके कहल्कै । "स्थानीय सरकार बन्लाहाके बाद पैहेनका चोटी घोराही उपमहानगरपालिका थारू भसामे परहाइले लागलछै । यी बर निक बात चियै उ कैहैछै" येकरा कार्यान्वयन कराइले

थारु कल्याणकारी सभा या सहकार्य करैले तयार छै ।

घोराही उपमहानगरके तथ्याङ्क अनुसार उपमहानगरमे सबमिल्याके १ लाख ५६ हजार १६४ गोरामे थारूके जनसंख्या २५.४९ प्रतिशत छै। यैहनङ क्षत्रीसब २३.७० प्रतिशत, मगरसब १२.७८ प्रतिशत या औरोजाइतसब १०.८२ प्रतिशत छै ।

पाकल आम

नन्दलाल चौधरी

गर्मी महिना पाकल आम,
अमरसा लागे बिगरे काम ।
बम्बै,मालदह,कलकतिया ख्या,
सरही लगमें कमसम ज्या,
सपेता सांचे नामी सैबठाम ।
गर्मी महिना पाकल आम,
अमरसा लागे बिगरे काम ।
दशहरी टोकसे मीठ लागे,
केलवा अम्रपाली सब मांगे,
किसुनभोग कहे कांचे ख्याम ।
गर्मी महिना पाकल आम,
अमरसा लागे बिगरे काम ।
बड रसगर आम आ चुरा,
जैहनं बरका रौहके मुरा,
दही मिले त कुछोकेने काम ।
गर्मी महिना पाकल आम,
अमरसा लागे बिगरे काम ।
जलखैमें जौं ख्या हरबाह,
भातके नै उ करे परबाह,
जिरायके साफेने लेबे नाम ।
गर्मी महिना पाकल आम,
अमरसा लागे बिगरे काम ।
आम महिना आबे मेजवान,
अलहु तरलनै द्या जलपान,
आम ख्या करे मस्त आराम ।
गर्मी महिना पाकल आम,
अमरसा लागे बिगरे काम ।
घर घरदेख आ उप्या पतर,
आम खियावे वो तरबतर,
बरियाती ख्या करे उमजाम ।
गर्मी महिना पाकल आम,
अमरसा लागे बिगरे काम ।
ददा भौजी ख्या जब आम,
घुइरके घर कहे कतौने ज्याम,
दियोर ख्या ओंघरे ठामे ठाम ।
गर्मी महिना पाकल आम,
अमरसा लागे बिगरे काम ।
साइर सरहौजनी ख्या जे आम,
कखनोने बिसरे फोकराके नाम,
बैहनोके करे सब काम तमाम ।
गर्मी महिना पाकल आम,
अमरसा लागे बिगरे काम ।
मालदह सैबसे गुदगर लागे,
पातर छलका आंठी नैजागे,
कर मारे हेबे नाक डुगान ।
गर्मी महिना पाकल आम,
अमरसा लागे बिगरे काम ।
बिगहन बिगहा आम बगान,
थारू थरूहटके आपन शान,
जुग जुगसे चलल इ नाम ।
गर्मी महिना पाकल आम,
अमरसा लागे बिगरे काम ।

रानाथारु भसा और साहित्यके स्थिति

सागर कुस्मी 'संगत'

सुरुवाट

कैलाली और कंचनपुर जिल्लामे किल्लो बसोबास भव एक मात्र जाती हए रानाथारु । जिनके अपन छुट्टे संस्कृति, भेसभुसा, खानपान, रीतिरिवाज, चालचलन, परम्परा, गीतबाँस, और टरटिहुवार हए। यहाँ जा अभिलेखमे कैलाली और कंचनपुरसे प्रकाशित रानाथारु भासाको पत्रपत्रिका और कृतिके बारेमे चर्चा करि हए।

कैलालीके धनगढी उपमहानगरपालिका, कैलारी गाउँपालिका और कंचनपुरके कृष्णपुर नगरपालिका, लालझाडी गाउँपालिका, शुक्लाफाँटा नगरपालिका, भिमदत्त नगरपालिका, बेदकोट नगरपालिका, महाकाली गाउँपालिका, बेलौरी नगरपालिका और पुनर्वास नगरपालिकाके टमान भुभागमे रानाथारु समुदायके घना बस्ती गाउँ हए।

पत्रपत्रिका प्रकाशन

धनगढी कैलालीके श्यामलाल राना और नारदमुनी रानाके सम्पादनमे 'राम राम' मासिक पत्रिका २०६० सालमे प्रकाशित भव रहए । २ अंक सम प्रकाशन हूइके जा पत्रिका फिरसे पुनः प्रकाशन होन ना सकी । जहे पत्रिका रानाथारु भासाको पहिल पत्रिका हए । जक बादम छे वर्षक पिछछु जगदीश रानाके सम्पादन और नेपाल रानाथारु समाज कैलालीके प्रकाशनमे ' लखबारी' मासिक पत्रिका २०६६ सालमे प्रकाशित भव। २ अंक सम प्रकाशन हुइके जहु पत्रिका फिर स्थगित हुइगव ।

समय करोट लेटसँगै धनगढी कैलालीसे भानुप्रताप रानाके सम्पादनमे 'उजियारो' अर्ध वार्षिक पत्रिका २०७५ सालमे निकरो। जहु पत्रिका फिर ३ अंक किल्लो प्रकाशित हुइके कोरोनाके माहामारीसे बन्द हुइगव। भानुप्रताप रानाके कहाइ अन्सार जा पत्रिका फिर निकारनके तयारी होन बटाइ हए । अइसिए करके पत्रपत्रिका प्रकाशन होन और बन्द होनके प्रक्रिया चलटपेटी धनगढी कैलालीसे नन्दलाल रानाके सम्पादनमे, आँगनबारी प्रालीके प्रकाशनमे 'सबेरो' अर्ध वार्षिक पत्रिका २०७६ प्रकाशित भव। रानाथारु भासाको अभैटक नियमित प्रकाशन भइरहो जहे किल्लो पत्रिका हए। जा पत्रिका ५ अंक के तयारीमे जुटो हए।

रानाथारु समुदाय भिटर अभैटक बहुत लोक साहित्य और संस्कृति हए। जाको संकलन करके कृति प्रकाशन होन ना सकत हए । यहाँ रानाथारु समुदायसे कुछ लेखक लोगनके प्रकाशित भव कृतिके बारेमे उपशीर्षक ढरके चर्चा करि हए।

विवेक राना

धनगढी उपमहानगरपालिका ११ जुगेडा कैलाली घर भव ऐया सिन्टोला देवी राना और ओ डौवा वैदु रानाके कोखसे २०४७ साल कात्तिक २८ गते जन्मो भव विवेक राना 'बन्धन' उपन्यास २०६५ सालमे प्रकाशन करि हए । जा रानाथारु भासाको पहिलो उपन्यास हए। गाउँघरके परिवेश, समाजके चित्रण, यथार्थ घटनामे आधारित जा एक सामाजिक उपन्यास हए।

पदम राना

कृष्णपुर नगरपालिका ९ पचढकी कंचनपुरके पदम रानाके 'फगुनी' उपन्यास २०६७ सालमे प्रकाशित भव डिखाट हए । जा रानाथारु भासाको दुसरो उपन्यास हए । लेखकके जानकारी ना हुइके हुइहे पहिलो उपन्यास कहिके लिखी हए। पर जहु फिर एक सामाजिक उपन्यास हए। जा से अग्गु विवेक रानाके ' बन्धन' उपन्यास २०६५ प्रकाशित हुइ गव हए।

नारायण राना

कृष्णपुर नगरपालिका ८ पिपरिया कंचनपुरके नारायण रानाके 'खोजी रानाथारु (थरुवक) अंश और वंशकी' २०६९ सालमे प्रकाशन करि हए। जा किताब लेखक अपन थर और वंशके खोज संकलन करके प्रकाशन करि हए।

रामप्रकाश राना

कैलारी गाउँपालिका ९ गदरिया कैलालीके रामप्रकाश रानाके 'प्रश्न उत्तर' गजल संग्रह २०७० सालमे प्रकाशित भव हए। जा गजल संग्रह रानाथारु भासाके पहिलो गजल संग्रह हए।

बमबहादुर राना (बम्मन)

बेलौरी नगरपालिका ३ पडाव कंचनपुरके बमबहादुर राना (बम्मन) 'नाच गीत संग्रह' २०७८ सालमे प्रकाशित भव डिखात हए । रानाथारु समुदायमे तमान चाडपर्वमे गानबाली गीत संकलन हए जा किताबमे।

अनलाइन पत्रपत्रिका

जा आधुनिक जबानामे प्रविधि के विकास सँगै अनलाइल पत्रिका धमाधम संचालन होन दति हए। जहु सँगै धनगढी कैलालीके नन्दलाल राना आँगन बारी मिडिया प्रालीं विधिवत रुपमे दर्ता करके रानाथारु भासाको 'रानाथारु डट कम' संचाकन करि हए। जा अनलाइल रानाथारुको पहिलो अनलाइन न्युज पोर्टल हए। जक संचालक/सम्पादक नन्दलाल राना जो हए। अनलाइन समाचार और रानाथारु भासाको साहित्यिक लेख रचनाको स्थान डएभव डिखाट हए।

अइसिए करके दुसरो अनलाइन फिर संचालनमे आव हए । बि प्लस नेपाल डट कम रानाथारुको अनलाइन संचालनमे आव हए। भानु प्रताप राना अध्यक्ष और भक्तराज राना को सम्पादनमे भव जा अनलाइन नेपाली भासाके समाचार और रानाथारु भासाके समाचार और लेख रचनाको स्थान डएभव डिखाट हए।

रानाथारु कलाकार मन्च

रानाथारु गीत संगीत विकासके ताँही अभेक युवा जागरुक होन डटि हैं। श्रीशा रानाके अध्यक्षतामे रानाथारु कलाकार मंच २०७८ सालमे गठन भव हए।

गीति एल्बम

हरेक समुदायके अपन अपन चलन अन्सार गीत संगीत होट हए । यहाँ रानाथारु समुदायकी फिर टमान गीति एल्बम निकरो हए। २०५५ साल ओर सगुन निकरो। जहु एल्बम रानाथारुनके पहिल गीति एलबम ठहरो। जक बाद नैना,, प्रेम कहानी, मिलन, सोलअ बरसके जवानी, मेरी नजर, बसन्त बहार और सन्देशो लगायत एल्बम बजारमे आव हए । पर आब प्रविधिके विकास सँगै बहुतसे भिडियो बजारमे आन डटि हए।

रानाथारु फिल्म

रानाथारु भासाके फिल्म फिर बनो हए । मंगनी फिल्म रानाथारु भासाके पहिली फिल्म हए । अइसिए करके घुँघत फिल्म स्थगित परो हए। अइसिए करके गुज्ज, ऐसो प्यार कहाँ, मेला फिल्म बनो हए।

टरटिहुवार

रानाथारु समुदायके फिर मेरमेरिक टारटिहुवार हए। तीज, सावन डोला, कृष्ण अस्टिमकी, इँट्वारी, डसिया, डिवाली, माघ, खखडेहरा और होरी। होरी रानाथारु समुदायके सबसे बडो टिहुवार हए। जा टिहुवार ३८ दिनटक मनाट हए।

निष्कर्ष

शिक्षक नन्दलाल राना को अनुसार २०४४/०४५ सालओर जगन्नाथ राना 'जगल कृत गितावली' कहन बारो किताब प्रकाशित भव सुनात हए । पर जा फेला ना परि हए । उइसिए करके जहु समयमे 'खलका' कहन बारो किताब फिर प्रकाशित भव बटाट हैं। पर जहु फेला ना परो हए। कैलाली और कंचनपुरसे खोज अनुसन्धान करन हए कहेसे अभैटक टमान प्रकाशित कृति फेला पर सकट हए। जकताँही जा समुदायके युवा वर्ग पहल करन जरुरी हए । बुढापाका दिनदिने बिटट जाट हए। बिनसे अभेक शिक्षित युवा खोज अनुसन्धान करके लोक साहित्य, संस्कृति, गीतबाँस, कथा कहानी संकलन करके संरक्षण और सम्वर्द्धन करन जरुरी हए । नयाँ नयाँ युवा लोग कलम चलान आफके आवश्यकता हए। धन्यवाद ।

(लेखक धनगढी कैलालीसे प्रकाशित हरचाली साहित्यिक त्रैमासिकके प्रकाशक और प्रधान सम्पादक हैं।)

पृष्ठ संयोजक: सहदेव चौधरी, **पत्राचार ठेगाना**: नयाँ नेपाल, **गोरखापत्र दैनिक**, पो.ब.नं.२३, काठमाडौं email: pressnepali@gmail.com